संपादकीय जागरण

सोमवार, 5 नवंबर, 2018 : कार्तिक कृष्ण 13 वि. 2075

गलती को स्वीकार करना उसे सुधारने की दिशा में पहला कदम है

बैंकों की मदद

बैंकों की पुनर्पूंजीकरण योजना के तहत उन्हें 20 हजार करोड़ रुपये और देने की तैयारी यही याद दिलाती है कि सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की गलतियों की सजा सरकारी कोष यानी आम आदमी को भुगतनी पड़ रही है। इस गलती में रिजर्व बैंक के साथ पिछली संप्रग सरकार भी शामिल है। हालांकि मोदी सरकार ने सत्ता में आते ही घाटे में डूबते बैंकों की सुध ली, लेकिन तब तक शायद देर हो चुकी थी और इसीलिए पिछले वर्ष उसे यह घोषणा करनी पड़ी कि दो लाख 11 हजार करोड़ रुपये की सहायता से बैंकों की हालत सुधारी जाएगी। फिलहाल कहना कठिन है कि बैंकों को सरकारी सहायता की जरूरत कब तक पड़ती रहेगी, क्योंकि बैंकों की पुनर्पूंजीकरण योजना के तहत उन्हें कुल दो लाख 11 हजार करोड़ रुपये दिए जाने हैं और उनमें डूबी रकम आठ लाख करोड़ रुपये से भी अधिक है। इसमें संदेह है कि अब बैंकों ने अपनी कार्यप्रणाली ऐसी कर ली है कि भविष्य में वे वैसी स्थितियों से दो-चार नहीं होंगे जैसी स्थितियों से हुए और जिसके चलते वे एक तरह से बर्बाद होने के कगार पर पहुंच गए। फिलहाल यह कहना भी कठिन है कि रिजर्व बैंक ने निगरानी और नियमन संबंधी अपनी खामियों से सबक लेकर ऐसी व्यवस्था कर ली है जिससे सार्वजनिक क्षेत्र के सभी बैंक सतर्क हो गए हैं। यह किसी से छिपा नहीं कि अभी भी रह-रहकर ऐसे मामले सामने आ रहे हैं जो यह बताते हैं कि बैंक घाटे में डूबी अपनी रकम अथवा फंसे हुए कर्जों के बारे में रिजर्व बैंक को समय पर सूचना देने से बच रहे हैं। यही कारण है कि अनुचित तरीके से कर्ज लेकर उसे लौटाने में आनाकानी करने वालों के नाम सामने आने का सिलसिला कायम है।

वैसे तो यह सरकार को सुनिश्चित करना है कि सरकारी बैंक सही तरह चलें और उनके फंसे कर्ज एक सीमा से अधिक न होने पाएं, लेकिन बैंकों की नियामक संस्था होने के नाते रिजर्व बैंक की भी जिम्मेदारी बनती है। अगर उसने अपनी जिम्मेदारी का निर्वाह सही तरह किया होता तो आज जो दिन देखने पड़ रहे हैं उनसे बचा जा सकता था। ये जो लाखों करोड़ों रुपये एनपीए में तब्दील हो गए हैं उसके लिए रिजर्व बैंक अपनी जवाबदेही से बच नहीं सकता। यह एक विडंबना ही है कि जब सरकार ने इस जवाबदेही को रेखांकित किया तो रिजर्व बैंक की ओर से अधिकारों में कमी का रोना रोया गया। आखिर यह बात पहले क्यों नहीं सामने लाई गई कि रिजर्व बैंक के पास वैसे अधिकार नहीं हैं जैसे होने चाहिए। कम से कम अब तो यह सुनने को नहीं ही मिलना चाहिए कि रिजर्व बैंक पर्याप्त अधिकारों से लैस न होने के कारण बैंकों की सही तरह निगरानी नहीं कर पा रहा है। यह भी समय की मांग है कि जिन 11 बैंकों को दुरुस्त करने के लिए एक विशेष ढांचे में रखा गया है उनकी कार्यप्रणाली को लेकर सरकार और रिजर्व बैंक के मतभेद यथाशीघ्र दूर हों। यह ठीक नहीं कि जब रिजर्व बैंक और सरकार को आपस में मिलकर काम करना चाहिए तब उनमें तनातनी की खबरें आ रही हैं।

ट्रामा सेंटरों की जरूरत

हादसों में घायलों को जल्द चिकित्सा सुविधा मिलने से उनके बचने की संभावना कई गुना बढ़ जाती है। इसी उद्देश्य से ट्रामा सेंटरों की परिकल्पना की गई है लेकिन दुर्घटनाओं में हताहत होने वालों की संख्या बढ़ने के बावजूद ट्रामा सेंटरों पर उचित ध्यान नहीं दिया जा रहा है। स्वास्थ्य विभाग की उदासीनता का आलम यह है कि वह चार साल में भी ट्रामा सेंटरों को पूरी तरह क्रियाशील करने में सफल नहीं हो सका है। दूसरी ओर चिकित्सा शिक्षा विभाग ने चार महीने में लखनऊ और प्रयागराज के ट्रामा सेंटरों को तैयार कर लिया है। लखनऊ के ट्रामा सेंटर को एक साल में चार गुना विस्तार मिल जाएगा। कुंभ को ध्यान में रखकर इलाहाबाद मेडिकल कॉलेज के ट्रामा सेंटर को भी पर्याप्त विस्तार दिया जाएगा। स्वास्थ्य विभाग ट्रामा सेंटरों के प्रति पूरी तरह उदासीन दिखता है।

राजमार्गों के किनारे एक निश्चित दूरी पर भले ही कम बेड के हों, पर पूर्ण सुसज्जित ट्रामा सेंटरों की स्थापना के बारे में विचार किया जाना चाहिए

लखनऊ में नौ साल पहले ट्रामा सेंटर बनना शुरू हुआ था, पर वह राजनीति की भेंट चढ़ गया। आधे-अधूरे रूप में ही दो साल पहले तत्कालीन सपा सरकार में इसका लोकार्पण कर दिया गया। इसमें सुविधाएं न होने के कारण यह दुर्घटना में घायलों की जान का दुश्मन बन गया है। कुछ घायल यहां पहुंच तो जाते हैं लेकिन, समुचित इलाज न मिलने से उनकी जान का जोखिम और बढ़ जाता है। हालांकि दुर्घटनाओं की संख्या कम करने के लिहाज से सड़क निर्माण में रोड सेफ्टी मानकों के पालन पर ध्यान दिया जाने लगा है, चालकों को जागरूक करने का भी प्रयास किया जा रहा है, फिर भी दुर्घटनाएं बढ़ रही हैं। हादसे की स्थिति में घायलों को त्वरित और उचित इलाज मिले यह व्यवस्था भी जरूरी है। राजमार्गों के किनारे एक निश्चित दूरी पर भले ही कम बेड के हों, पर पूर्ण सुसज्जित ट्रामा सेंटरों की स्थापना के बारे में विचार किया जाना चाहिए।

कह के रहेंगे — माधव जोशी

जागरण जनमत — कल का परिणाम

क्या अदालती फैसलों के हिंदी में अनुवाद से लोगों में न्यायिक समझ बढ़ेगी?

आज का सवाल

क्या अयोध्या विवाद के निपटारे के लिए अध्यादेश का विकल्प व्यावहारिक होगा?

अपनी राय और अधिक लोगों तक पहुंचाने के लिए अपने मोबाइल के मैसेज बॉक्स में जाकर **POLL** लिखें, स्पेस देकर **Y, N** या **C** लिखकर 57272 पर भेजें
Y –हां, **N**–नहीं, **C**–कह नहीं सकते

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है।
सभी आंकड़े प्रतिशत में।

समृद्धि और प्रकाश की पोषक परंपरा

हृदयनारायण दीक्षित

भारत की सनातन ज्योतिर्गमय आकांक्षा का सांस्कृतिक आयोजन दीपावली अब दुनिया के कई देशों में भी उल्लासपूर्वक मनाया जाने लगा है

प्रकृति बहुरूपवती है। यह सदा से है। प्रतिपल नए रूप में होती है, लेकिन इसकी श्रेष्ठतम अभिव्यक्ति प्रकाश है। छांदोग्य उपनिषद के अनुसार 'प्रकृति का समस्त सर्वोत्तम प्रकाश रूप है।' सूर्य प्रकृति का भाग हैं। वैदिक वांग्मय में देवता हैं। सहस्त्र आयामी प्रकाशदाता हैं। वैदिक पूर्वज प्रकृति में भरी पूरी प्रकाश ऊर्जा का केंद्रक न्यूक्लियस जानना चाहते थे। इस जिज्ञासा के उत्तर में कठोपनिषद मुंडकोपनिषद व श्वेताश्वतर उपनिषद में एक ही बात कही गई है 'उस केंद्र पर सूर्य प्रकाश नहीं, चंद्र किरणों का भी नहीं। न विद्युत है और न अग्नि, लेकिन उसी एक ज्योति केंद्र से यह सब प्रकाशित है। प्रकाश प्राचीन भारतीय दर्शन व विज्ञान की सनातन प्यास है। वृहदारण्यक उपनिषद में 'तमसो मा ज्योतिर्गमय, असतो मा सद्गमय यानी अंधकार से प्रकाश व असत से सत की ओर चलने का संदेश है।' गीता में अर्जुन ने विराट रूप देखा, बोला 'दिव्य सूर्य सहस्त्राणि यानी सहस्त्रो सूर्यों का प्रकाश देख रहा हूं। ऋग्वेद के अनुसार, 'जन-जन को प्रकाश से भरने के लिए ही अग्नि ने अमर सूर्य को आकाश में बिठाया है।' भारत की इसी सनातन ज्योतिर्गमय आकांक्षा का सांस्कृतिक आयोजन दीपावली है।

दीपावली निराला प्रकाश पर्व है। दिवस श्रम है, रात्रि विश्रम। रात्रि प्रकाशहीनता है। चंद्र सूर्य से प्रकाशित हैं। वे रात्रि में प्रकाश देने का प्रयास करते हैं। घटते-बढ़ते हुए। पूर्णिमा पूर्ण है। पूर्वजों ने पूर्णिमा में उल्लासपूर्ण प्रकाश अनुभूति देखी। शरद पूर्णिमा उत्सव हो गई। ठीक 15 दिन बाद पूर्ण अंधकार वाली कार्तिकी अमावस्या। तब अंधकार भी अंधकार में अदृश्य था। पूर्वजों ने इसी अमावस्या को झमाझम प्रकाश पर्व बनाया। भारत का शाब्दिक अर्थ प्रकाशरत है। भा का अर्थ प्रकाश और रत का अर्थ संलग्नता। दीपपर्व का मुख्य आयोजन अमावस्या की रात्रि होता है, लेकिन मान्यताओं ने इसे पांच दिवसीय मधुमय आयोजन बनाया है। लंका विजय कर अयोध्या लौटे श्रीराम का स्वागत सहस्त्रों दीपों द्वारा हुआ। 12 वर्ष के वनवास व एक वर्ष के अज्ञातवास के बाद पांडवों की वापसी हुई। कुछ लोग इसे भी दीपपर्व से जोड़ते हैं। दीपपर्व का उल्लेख पद्म पुराण व स्कंद पुराण में भी है। लगभग 3500 वर्ष ईसापूर्व कठोपनिषद में यम और नचिकेता के मध्य सांसारिक धन संपदा व वास्तविक ज्ञान पर प्रश्नोत्तरों की स्मृति को भी दीपपर्व से जोड़ा जाता है। इतिहासकार अलबरूनी ने भी दीपावली का उल्लेख किया है।

दीपपर्व का प्रकाश आनंद अचानक नहीं खिला। भारतीय परंपरा में दीपपर्व की निरंतरता है। सातवीं शताब्दी के संस्कृत नाटक नागनंद में इसे 'दीपप्रति पादुत्सव' कहा गया है। नौवीं शताब्दी में राजशेखर ने काव्य मीमांसा में इसे दीपमालिका कहा है। इस पर्व की देवी श्रीलक्ष्मी हैं। कहा जाता है कि उन्होंने इसी रात पति रूप में विष्णु का वरण किया। लक्ष्मी और विष्णु का रूपक बड़ा प्यारा है। दोनों क्षीर सागर में शेष शैय्या पर हैं, लेकिन शांत हैं। 'शान्ताकारं भुजग शयनं' आश्चर्यजनक है। सांप पर लेटना और शांत रहना। इसीलिए धन की देवी लक्ष्मी

रिद्धि, सिद्धि, समृद्धि के विवेकाधीन कोष की स्वाभिमानी हैं। ऋग्वेद में समृद्धि देवी से स्तुति है 'सामान्य धनी दोगुनी, तीन गुनी चार गुनी संपत्ति चाहते हैं। धन का निजी हित में प्रयोग करने वाले दंडनीय हैं।' धन के सामाजिक उपयोग पर जोर है। पश्चिमी अर्थशास्त्र में उद्यमी को 'साहसी' कहा गया है और लाभ को साहस का पुरस्कार। 'शुभ लाभ' भारतीय चिंतन का विकास है। लाभ में टैक्सचोरी, मिलावट आदि भी है। शुभ लाभ में यह तत्व नहीं होते। आर्थिक दुष्चक्र से बड़ों की संपदा लगातार बढ़ी है। 2016 के एक आकलन के अनुसार एक प्रतिशत धनिकों के पास 58.4 प्रतिशत धन है। 10 प्रतिशत के पास 80 प्रतिशत संपदा है। विषमता चिंताजनक है।

प्रकाश राष्ट्रधर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का संधान है। धन समृद्धि और ज्ञान प्रकाश पर भारत के प्रत्येक जन का अधिकार है, लेकिन विषमताएं गहरी हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश के प्रत्येक गांव तक विद्युत प्रकाश पहुंचाया है। प्रत्येक घर को प्रकाशित करने का उनका ध्येय स्वागतयोग्य है। उद्यमी को 59 मिनट में ऋण उपलब्ध कराने की घोषणा दीपावली का गिफ्ट है। ऐसी तमाम योजनाएं और भी हैं, लेकिन जीवनदृष्टि में प्रकाश भरने का काम सरकारें ही नहीं कर सकतीं। अलगाववादी बयान देने वाले प्रकाश धर्म पर आक्रामक हैं। संसदीय मर्यादा ह्रासमान है। विभाजक सामाजिक अस्मिताएं और मजबूत हुई हैं। हम सब अपना सामाजिक दायित्व क्यों नहीं निभाते? पर्व, उत्सव और संगमन सांस्कृतिक उदात्त भाव में ही प्रकट होते हैं। किसी अमंगल मुहूर्त में दीपपर्व के साथ आतिशबाजी जुड़ी। वायु प्रदूषण जानलेवा है बावजूद इसके पटाखे हवा में जहर घोल रहे हैं। जुआ भी इस पर्व का हिस्सा बना है। गणेश-लक्ष्मी निश्चित ही आहतमन होंगे। उत्स मूल है। उत्सव इसी मूल उत्स में व्यापक होता है। आनंद का अतिरेक बढ़ता है। आनंद सबको आवृत्त करता है तब उत्सव बनता है।

दीप राग का मूल है-अप्प दीपो भव। स्वयं दीप बनो। बुद्ध ने ढाई हजार वर्ष पहले यही कहा था। तुलसीदास रामचरितमानस में 'विज्ञानदीप' प्रतीक लाए। वह सात्विक आस्तिकता को गाय कहते हैं। आस्तिकता की गाय से धर्ममय दूध दुहते हैं। धर्म से ठंडा करते हैं। फिर दही को विचार से मथते हैं-मुदिता मथै विचार मथानी। योग अग्नि पर तपाकर ज्ञान घृत निकालते हैं। चित्त के दीप में ज्ञान घृत डालते हैं फिर जागृति, स्वप्न और सुषुप्ति की बाती। तब विज्ञानमय दीप बनता है-एहि विधि लेसै दीप/तेज राशि विज्ञानमय। फिर विज्ञानमय बुद्धि पर समता का आधार बनाएं-समाता दिअटि बनाइ। आधुनिक भारत में वैज्ञानिक दृष्टिकोण की महत्ता है, लेकिन समता-समरसता का अभाव है। गरीबी की खाई गहरी है। यहां अंधकार ही अंधकार है। समृद्धि के शिखर पहाड़ से भी ऊंचे हैं। हिंसा के विश्वासी समूह संप्रभु गणतंत्र को चुनौती देते हैं। यहां उनके पक्षकार बुद्धिजीवी कहे जाते हैं। प्रकाश पर्व की रस लब्धि नहीं होती। तुलसी के विज्ञान दीप में समता मुख्य आधार है। धैर्य, धर्म, विचार, जीवन के श्रेष्ठ उपकरण हैं।

दीपपर्व भारत के प्रकाश अमीप्सु चित्त का सृजन है। प्राचीन यूनानी दर्शन और भारतीय उपनिषदों की अनेक बातें समान हैं। व्यापार प्रसार व बौद्धिक प्रयोजनवश अनेक भरतवंशी बाहर गए थे। दीपपर्व भी साथ गया हो तो आश्चर्य क्या है? मलेशिया में इस पर्व पर सार्वजनिक अवकाश भी है। सिंगापुर सरकार भी दीपपर्व आयोजनों में साथ देती है। यह उत्सव श्रीलंका में भी है। ऑस्ट्रेलिया में 2006 से इसे मनाया जा रहा है। विक्टोरियन संसद, फेडरेशन स्क्वायर मेलबोर्न हवाई अड्डे व भारतीय दूतावास को सजाया जाता है। अमेरिका में 2007 में इसे सरकारी घोषणा द्वारा स्वीकृत किया गया। बराक ओबामा ने 2009 में दीपावली उत्सव में भाग लिया। ब्रिटेन, न्यूजीलैंड, फिजी, पाकिस्तान, थाइलैंड, इंडोनेशिया, सूरीनाम, कनाडा और संयुक्त अरब अमीरात में भी दीप उत्सव होते हैं। दीपपर्व का खूबसूरत सांस्कृतिक निर्यात हुआ है। हम भारतीय इसके जन्मदाता हैं। दीप की महत्ता विराट है। कवि नीरज ने लिखा है 'उग रही लौ को न टोको/ ज्योति के रथ को न रोको/ जल गया है दीप तो अंधियार ढलकर ही रहेगा।' आइए एक दीप भारत और भारतीयता के लिए भी जलाएं।

(लेखक उत्तर प्रदेश विधानसभा के अध्यक्ष हैं)
response@jagran.com

आस्था से आहत होती व्यवस्था

एनके सिंह

जहां भी समाज के किसी वर्ग की आस्था हो क्या उनसे जुड़े मामलों में अदालतों को फैसले सुनाने का हक नहीं होना चाहिए

विश्वविख्यात अर्थशास्त्री और नोबेल पुरस्कार विजेता अमर्त्य सेन ने अपनी बहुचर्चित पुस्तक 'द आइडिया ऑफ जस्टिस' में एक अध्ययन का जिक्र किया है। केरल स्वास्थ्य मानदंडों में भारत के अन्य राज्य तो छोड़िए, चीन से भी आगे और लगभग यूरोप के समकक्ष है। इसका कारण वहां राज्य सरकारों द्वारा स्वास्थ्य और शिक्षा पर पिछले कुछ वर्षों में किया गया खर्च है। इसके ठीक विपरीत सरकारी भ्रष्टाचार और उदासीनता के कारण बिहार और उत्तर प्रदेश इन पैमानों पर लगातार रसातल में बने हुए हैं। असामान्य रूप से जीवन प्रत्याशा और खासकर वृद्धावस्था की मृत्यु दर बढ़ी हुई है, लेकिन जब बीमारी को लेकर व्यक्तिगत संतुष्टि का आकलन किया गया तो केरल में सबसे ज्यादा असंतुष्ट लोग पाए गए तो बिहार और उत्तर प्रदेश में सबसे कम असंतुष्ट। इसके कारण को खोजने पर सेन को पता चला कि 'अभाव में भी संतुष्टि' का यह भाव बिहार और उत्तर प्रदेश के लोगों में इसलिए है कि उन्हें कभी भी सरकारों से अपेक्षा नहीं रही, क्योंकि वे जानते भी नहीं कि सरकार की भूमिका जनजीवन को उठाने में क्या और कहां तक है।

सेन की धारणा का मतलब यह है कि अशिक्षा, अज्ञानता और सत्ता, सरकार और राज्य अभिकरणों के प्रति 'जाही विधि रखे राम, ताहि विधि रहिये' का दासत्व भाव आज भी उत्तर भारत के इन दो राज्यों में हीं नहीं, बल्कि हिंदी पट्टी में भयंकर रूप से व्याप्त है। इसके एकदम उलट केरल में हमेशा से शिक्षा की स्थिति बेहतर रही है और सामूहिक चेतना विकास के तमाम मानदंडों को लेकर तार्किक और सत्ता पर दबाव बनाने वाली रही है। एक कुंठित और तार्किक रूप से अवैज्ञानिक समझ वाले समाज को 'मैनेज' करना सरकारों के लिए ज्यादा आसान रहता है, क्योंकि भ्रष्टाचार में डूबे हुए होने के बावजूद राजनीतिक दल उन्हें भावनात्मक रूप से बरगलाकर अपने पक्ष में कर ही लेते हैं।

यहां एक प्रश्न विश्लेषकों से भी बनता है कि यदि पिछले 70 वर्षों में समाज की समझ ही गाय, तलाक, मंदिर और मस्जिद जैसे मुद्दों से ऊपर ही नहीं बढ़ पा रही है तो दोष केवल राजनीतिक वर्ग का ही क्यों माना जाए? अगर केरल जैसे शिक्षित और तार्किक सामूहिक सोच वाले राज्य में भी सर्वोच्च न्यायालय के आदेश को ठेंगा दिखाते हुए महिलाओं को सबरीमाला में प्रवेश नहीं दिया जा रहा है तो भला राजनीतिक दल इसे क्यों नहीं भुनाएंगे। यहां सवाल यह भी है कि अगर यह समझते हुए भी कि हर चुनाव के पहले आरक्षण, धार्मिक प्रतीकों और जातिवाद का मुद्दा 'बोतल में बंद जिन्न' की तरह बाहर निकल आता है तो समाज की आंखों पर पर्दा क्यों पड़ा रहता है और वह चुनाव दर चुनाव धोखा खाते हुए भी यह संदेश नहीं दे पाता कि खूंखार अपराधी शहाबुद्दीन की जगह संसद नहीं सलाखों के पीछे है। शहाबुद्दीन कैसे चार बार प्रजातंत्र के सबसे 'पवित्र मंदिर' लोकसभा में चुन कर आता है? और क्यों किसी लालू यादव को यह संदेश नहीं जाता कि भ्रष्टाचार और अपराध की प्रजातंत्र में जगह नहीं? कैसे किसी राजनीतिक दल का नेता जनमंच से यह चेतावनी दे सकता है कि सुप्रीम कोर्ट आस्था के मुद्दे से छेड़खानी करने से बाज आए?

दरअसल समाज का एक तबका जिनमें कुछ शिक्षित शहरी लोग और राजनीतिक वर्ग भी शामिल है, वे जनमंचों पर तो विकास की बात करते हैं। इसे सिद्ध करने के लिए 'अपने पक्ष के चुनिंदा आंकड़े' भी पेश करते हैं, लेकिन वापस लौटकर वे दल जाति और संप्रदाय के आधार पर टिकट दे देते हैं। और यह तथाकथित शिक्षित शहरी वर्ग अपनी जाति के नेता के घर अपने बेटे की नौकरी लगवाने या अपना तबादला रुकवाने या मलाईदार जगह करवाने के लिए पहुंच जाता है। अगर आस्था इतनी अक्षुण्ण है तो फिर दुष्कर्म के आरोप में बाबा आसाराम को जेल क्यों? वह तो आज भी लाखों लोगों का भगवान है? राम रहीम को आज भी खुला छोड़ दें और देख लें कि सियासी दल उनके भक्तों के वोटों के लिए उनके आगे कैसे नतमस्तक होते हैं।

आखिर इस संविधान का क्या होगा जिसके अनुच्छेद 14 में समानता को मौलिक अधिकार माना गया और सर्वोच्च न्यायालय से उसे बनाए रखने की अपेक्षा की गई। सबरीमाला मंदिर में तो सभी आयु की महिलाओं के मंदिर में प्रवेश का मामला था और भारत में एक बड़ा वर्ग इस फैसले के पूर्व इस मंदिर का नाम भी नहीं जनता था। ऐसे में क्या राजनीतिक पार्टी के हिसाब से जहां भी समाज के किसी वर्ग की आस्था हो, अदालतों को फैसले सुनाने का हक नहीं होना चाहिए। तब फिर चौराहे या सड़कों पर एक मस्जिद, एक मंदिर हर रोज बनाए जाते रहेंगे और कुछ दिन में भक्त भी वहां आने लगेंगे। इस तरह आस्था बढ़ जाएगी और तब सड़कें जाम होने लगेंगी, क्योंकि पूजा या अजान से ऊपर कुछ नहीं।

हम आने वाली पीढ़ियों के लिए कैसा भारत बनाते जा रहे हैं? अमर्त्य सेन ने इसका कारण बताया है। उनके अनुसार हमारे तार्किक फैसले और किसी फैसले का चुनाव करते समय असली इच्छा में एक बड़ा अंतर रहता है। इसे 'इच्छा की कमजोरी' कहते हैं जिसे ग्रीक दर्शन में 'अक्रासिया' के नाम से जाना जाता है। भारत के समाज दर्शन में इसे 'अपूर्ण आत्मनियंत्रण' भी माना गया है। कितना साम्य है, केरल के उस शिक्षित व तार्किक समाज में जो सर्वोच्च न्यायालय के आदेश के खिलाफ महिलाओं को पुरुष सत्ता की जकड़न से निकलने नहीं देना चाहता। इसमें दोनों पक्षों की ओर से राजनीतिक रोटियां सेंकने वाले खड़े हैं। वहीं उत्तर प्रदेश और बिहार का बीमार समाज जो शिक्षा और स्वास्थ्य के अभाव में तिल-तिल कर मर रहा है, लेकिन 'आस्था' और 'भावनात्मक' मुद्दों पर सर्वोच्च न्यायालय से भी दो-दो हाथ करने को उद्धत है। तभी उत्तर प्रदेश के गेरुआधारी मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ 'अन्य' विकल्पों की बात कह रहे हैं तो केंद्रीय राज्यमंत्री गिरिराज सिंह ने इस अदालत से जनवरी में पीठ बनाए जाने के फैसले के अगले दिन कहा कि 'मुझे डर है कि कहीं हिंदुओं के सब्र का बांध न टूट जाए।' जाहिर है कि आस्था की बात आस्थावान लोगों को ही अच्छी लगेगी और अगली बार फिर कोई गिरिराज, कोई लालू या शहाबुद्दीन या कोई ओवैसी संसद की शोभा बनेंगे। आजादी के 70 साल बाद भी बिहार में कुपोषण के कारण हर दूसरा बच्चा ठूंठ (स्टंटेड) या कमजोर (वेस्टेड) पैदा होता रहेगा और बड़ा होकर अशिक्षित और अस्वस्थ होते हुए भी आस्था का झंडा ऊंचा करता रहेगा। उधर बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने लोकसभा चुनाव की तैयारी के साथ अपने दलित प्रेम का प्रदर्शन करते हुए ताजा एलान किया कि 'किसी में ताकत नहीं जो अनुसूचित जाति व जनजाति का आरक्षण खत्म कर सके।'

(लेखक वरिष्ठ स्तंभकार हैं)
response@jagran.com

ऊर्जा

आत्म-सुधार

शरीर विनाशी और आत्मा अविनाशी है। यही शाश्वत सत्य है। ऐसा जानकर आत्म तत्व की ही उपासना करनी चाहिए। हमारे धर्मग्रंथों और उपनिषदों में भी ऐसा ही कहा गया है कि आत्म-दर्शन करना चाहिए। आत्म-दर्शन ही मानव जीवन का परम लक्ष्य है। इस परम लक्ष्य से सांसारिक कर्तव्यों की कोई असंगति नहीं है। आशय यह है कि संसार में रहते हुए सांसारिक कार्यों को करना ही है। आवश्यकता मात्र यह है कि ऐसे कार्यों से आसक्ति (लगाव) न हो। आसक्ति का अभाव ही तो मुक्ति है। दुख का कारण हमारी अनंत इच्छाएं ही तो हैं। जब इच्छाएं पूरी नहीं होतीं, तब हम दुखी हो जाते हैं।

प्रयास करके इच्छाओं को कम करना चहिए। संसार के समस्त पदार्थ विनाशी हैं। जो अविनाशी है, वह आत्मा है। यह आत्मा ही है, जिसके लिए कहा गया है कि शरीर के नष्ट हो जाने पर भी यह नहीं मरती। साधकों को इस जीवन में ही सचेत होकर निरंतर आत्म चिंतन करना चाहिए। जीवन की समापन बेला आने के पहले ही प्रभु प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त करें। प्रभु से प्रार्थना करें कि 'हे ईश्वर! मेरा मन आपके चरणों में लग जाए।' जीवन में सत्कर्मों को अपनाएं। पाप कर्मों से विमुख हो जाएं। कर्म सिद्धांत अटूट हैं। किए गए अपराधों के दुष्परिणामों को तो भुगतना ही होगा। इसलिए प्रयास करना चाहिए कि दुष्कर्म न हो। किसी को मत सताइए, किसी को मत पीड़ा दीजिए। चेत जाइए। अभी समय है। समय रहते ही स्वयं को सुधार लेना प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है। समय नष्ट हो जाने पर दुख करने से कुछ नहीं होगा। जब आप स्वयं को सुधार लेंगे, तब आपको दूसरे क्या कहते हैं, इस बात से तकलीफ नहीं होगी। आत्म-सुधार के संदर्भ में उठाया गया कदम आपके भविष्य को सकारात्मक दिशा की ओर ले जाएगा।

प्राण जाने के पूर्व ही सुधार किया जाना अपेक्षित है। अंतकाल में अचानक कुछ भी न हो सकेगा। तैयारी अभी से होनी चाहिए। शुभ संकल्प अभी से जगाने होंगे। संतों ने संदेश दिया है-'अच्छे कार्य करते रहें। सदाचार, परोपकार, भक्ति, ध्यान का मार्ग अपनाएं। आराधना द्वारा भगवान को अपना बनाएं। तभी आपकी मुक्ति सुनिश्चित है।' इस कार्य में आप जितना विलंब करेंगे आपकी मुक्ति का मार्ग उतना ही दुष्कर और दुरूह होता जाएगा।

डॉ. विजय नारायण गुप्त

पाठकनामा

pathaknama@nda .jagran.com

सुलह का रास्ता खोजें दल

फिर अधर में अयोध्या विवाद शीर्षक से लिखे अपने लेख में संजय गुप्त ने अयोध्या विवाद तथा राम मंदिर निर्माण से संबंधित विविध पहलुओं का गंभीर और तथ्यात्मक विश्लेषण किया है। उन्होंने सिलसिलेवार यह भी विवेचित करने का प्रयास किया है कि किस प्रकार तथ्य, भाजपा, विश्व हिंदू परिषद, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ तथा संत समाज एक ओर हैं और कुछ विपक्षी दल दूसरी ओर। हमें स्पष्ट रूप से यह समझना होगा कि जिस प्रकार हिंदू अथवा हिंदुत्व कोई धर्म नहीं, एक जीवन पद्धति का नाम है उसी प्रकार हमें यह भी समझना होगा कि भारतवर्ष में सामाजिक तथा सांस्कृतिक जीवन और राम में आधार आधेय संबंध है। यानी राम के बिना भारतीय समाज अस्तित्वहीन है। जब हिंदू-मुस्लिम दोनों भारतवर्ष की गंगा जमुनी संस्कृति के प्रतीक हैं तो राम में भी करोड़ों मुस्लिमों की आस्था देखी जा सकती है। निःसंदेह शुरू से ही इस विवाद का मूल कारण राजनीति रही है। वर्तमान में माननीय सर्वोच्च न्यायालय की ढिलाई अथवा टालमटोल भरे रवैये से करोड़ों भारतीयों की आस्था को ठेस पहुंची है और निराशा का माहौल बन रहा है। आज यह महती आवश्यकता है कि इस विवाद के यथाशीघ्र समाधान की ओर बढ़ा जाए। विभिन्न धार्मिक संगठन तथा राजनीतिक दल मिलकर राम मंदिर निर्माण का रास्ता खोजें, क्योंकि उससे सद्भाव का वातावरण भी बनेगा।

ved0550@gmail.com

दागियों को नकारें

दागी नेताओं के राजनीति में प्रवेश को रोकने के लिए उम्मीदवारों की जानकारी को सार्वजनिक करने का निर्णय सराहनीय है। इससे अपराधी स्वभाव के लोगों का राजनीति में आना कठिन हो जाएगा। इसके साथ ही जनता को भी सजग रहने की जरूरत है। जाति-धर्म से ऊपर उठकर गलत लोगों का समर्थन बंद करना होगा। प्रत्याशी अच्छा हो वह चाहे किसी भी पार्टी या धर्म-समुदाय से हो उसका समर्थन करना चाहिए। जिस दिन जनता ईमानदारी से निर्णय करने लगेगी तो कोई भी दल चाह कर भी गलत लोगों को टिकट नहीं दे सकेंगे।

युधिष्ठिर लाल कक्कड, लक्ष्मी गार्डन, गुरुग्राम

महंगाई और आमदनी

भारत में महंगाई का स्तर दिनों दिन बढ़ता जा रहा है। आम आदमी को कहीं पर भी राहत नहीं है। कभी पेट्रोल डीजल के दाम सर उठा लेते हैं तो कभी आलू -प्याज व गैस सिलेंडर के। आम आदमी के रोजमर्रा के जीवन में काम आने वाली चीजों के दाम बढ़ते चले जाते हैं और आमदनी की गति धीमी है। ऐसे में आम आदमी अपनी निजी जरूरतों को कैसे पूरा करे? सरकार ने उन घरों में गैस सिलेंडर तो लगवा दिए, जहां खाना चूल्हे पर बनता था। पर सवाल ये है की क्या वे लोग गैस सिलेंडर की बढ़ती हुई कीमत को चुका सकेंगे?

हेमा जोशी, डॉक्टर भीमराव अंबेडकर कॉलेज दिल्ली विवि

बोनस से वंचित

पिछले दो साल से केंद्रीय विश्वविद्यालयों में कार्यरत कर्मचारी और अधिकारी वर्ग को बोनस के लाभ से वंचित कर दिया गया है। हाल ही में केंद्रीय वित्त मंत्री अरुण जेटली ने पिछले 2 वर्ष के रुके हुए बोनस को स्वीकृति देते हुए केंद्र सरकार के मंत्रालयों और विभागों में बोनस का लाभ देने की घोषणा की। लेकिन न जाने क्यों कई विश्वविद्यालयों में कार्यरत कर्मचारियों और अधिकारियों को दीपावली पर मिलने वाले बोनस से वंचित किया गया है। इसे सरकार को देखना चाहिए।

विजय कुमार धनिया, नई दिल्ली

राष्ट्र के प्रति समर्पण का संदेश

आधुनिक भारत के शिल्पी सरदार पटेल की 182 फीट ऊंची प्रतिमा का अनावरण करके प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक कर्तव्यनिष्ठ सशक्त राजनेता को अभूतपूर्व श्रद्धांजलि अर्पित की है। इस प्रकार उन्होंने करोड़ों नवयुवकों में राष्ट्र के प्रति सजग व समर्पित रहने का भी एक सशक्त संदेश दिया है। सरदार पटेल की जयंती पर देश के विभिन्न नगरों में लाखों नागरिकों ने रन फॉर यूनिटी का उत्साहवर्धक प्रदर्शन करके देश की अखंडता व एकता के प्रति अपनी निष्ठा व दायित्व का बोध कराया। निःसंदेह राष्ट्रप्रेम के प्रति देशवासियों को तरंगित करने का यह माध्यम सफल हुआ। इससे देशवासियों में सुदृढ़ व समर्थ भारत निर्माण के प्रति और अधिक संवेदनशीलता जागृत हुई है। आज देश में कुछ राष्ट्रविरोधी तत्व सक्रिय हो रहे हैं। इनको नियंत्रित करना सुरक्षा बलों के साथ-साथ हम सबका भी सामूहिक दायित्व है।

विनोद कुमार, गाजियाबाद

इंसान में राम-रावण

वैसे तो राम और रावण हर इंसान के भीतर हैं। यानि हर इंसान में ये अच्छाई और बुराई दोनों ही विद्यमान होती हैं। इन्हें पहचान कर अच्छाई को प्रोत्साहित व बुराई को हतोत्साहित करने की जरूरत है। अगर लोग ऐसा कर सकें तो बहुत से अपराध स्वतः रुक जाएंगे, परंतु दुर्भाग्य से देश में पिछले कई वर्षों से तमाम तरह के अपराधों में वृद्धि हुई है, जो थमने का नाम ही नहीं ले रहे हैं। जबकि यह सर्वविदित है कि अपराध कोई भी हो उसका नतीजा बुरा ही होता है। रावण इसका सबसे बड़ा उदाहरण है। हर साल लोग दशहरा मनाते हैं, लेकिन इस जरा सी बात को अपराध करने वाले नहीं समझ पाते हैं।

वेद मामूरपुर, नरेला

ट्वीट-ट्वीट

राजस्थान में वसुंधरा के चार साल के शासनकाल में दुष्कर्म के मामलों का औसत 10 केस प्रतिदिन रहा। बीते नौ महीनों में दुष्कर्म के मामलों में 30 फीसद की बढ़ोतरी बहुत चिंताजनक है। महिलाओं की सुरक्षा में हो रही लापरवाही यह सिद्ध करती है कि मुख्यमंत्री ने जनता को अपने हाल पर छोड़ दिया है।

सचिन पायलट@SachinPilot

भुखमरी के मोर्चे पर भी भारत एक बड़ी ताकत बनता जा रहा है। ग्लोबल हंगर इंडेक्स की 119 देशों की सूची में भारत पिछले साल 100वें स्थान पर था जो इस साल और फिसलकर 103वें पायदान पर पहुंच गया।

देविंदर शर्मा@Devinder_Sharma

एक वक्त पंजाब में सत्ता की देहरी तक पहुंचती दिख रही आम आदमी पार्टी की हालत वहां दयनीय हो गई है। आंतरिक विद्रोह चरम पर है। निलंबन-निष्कासन आम हो गए हैं। यह त्रासदपूर्ण दुखद स्थिति असल में एक उम्मीद के दम तोड़ देने जैसी है।

आशुतोष@ashutosh83B

कांग्रेस नेता राजबब्बर नक्सलियों को क्रांतिकारी बताकर नक्सलों का नाम रोशन कर रहे हैं। आखिर कांग्रेसी हमेशा पाकिस्तानी जिहादियों, पत्थरबाजों और भारत के खिलाफ जंग छेड़ने वालों के पक्ष में क्यों आवाज उठाते नजर आते हैं।

विवेक अग्निहोत्री@vivekagnihotri

जनपथ

बब्बर साहब ने कही अपने दिल की बात,
कांग्रेस का हाथ है नक्सलियों के साथ।
नक्सलियों के साथ 'क्रांति' के बने पुजारी,
बांट रहे जो देश उन्हीं से इनकी यारी।
है उनसे ही प्यार करें जो हिंसा जी भर,
मरते रोज जवान न उनकी सोचें बब्बर।

– ओमप्रकाश तिवारी

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त. पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन. संपादकीय निदेशक-महेन्द्र मोहन गुप्त. प्रधान संपादक-संजय गुप्त, नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा जागरण प्रकाशन लि. के लिए डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित एवं 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित, संपादक (दिल्ली एनसीआर) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 23359961-62, नोएडा कार्यालय : 0120-3915800, **E-mail: delhi@nda.jagran.com,** R.N.I. No 50755/90 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई शुल्क अतिरिक्त। **वर्ष 29 अंक 111**